ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

वैचारिक बारूद और बौद्धिकता का कवि धूमिल

Poetic Tarnish of Ideological Gunpowder and Intellectualism

Paper Submission: 05/02/2021, Date of Acceptance: 24/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

ललित कुमार
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
वीर वीरमदेव राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जालोर, भारत

सारांश

सुदामा पांडेय धूमिल का जन्म 9 नवम्बर 1936 ई. में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के खेवली गाँव में हुआ था और 1975 ई. में उनकी मृत्यु हो गई। धूमिल बेखौफ और निडर कवि हैं। उनका काव्य साहस और कटुयथार्थ का काव्य है जो विकास, समानता और समृद्धि की अपेक्षाओं के साथ अभिव्यक्त होता है। 1960 के बाद भारत में राजनीति, प्रशासन और धार्मिक–सामाजिक ढ़कोसलों से मोहभंग की जो शुरूआत हुई उसके प्रमुख कवि धूमिल ही थे।

अकविता की वैचारिक सामग्री को निष्ठा और समर्पण से उठाने वाला कवि धूमिल ही है। धूमिल राजनीति से घृणा करने वाले कवि नहीं हैं, बल्कि राजनीतिक विकृतियों के विरोधी हैं।

धूमिल जब 'कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है' जैसी बात लिखते हैं तो उसी के साथ वे 'नक्सलवादी' जैसी कविता में 'शिष्टता' अर्थात 'तमीज' को परे रखते दिखते हैं ....लेकिन भावनाओं का ज्वार और शोषित विवश जनता की पीड़ा उन्हें ऐसा करने पर मजबूर करती दिखती है। कवि और कविता की भाषा पर धूमिल की नजर लगातार रही है और उनकी कविताओं का व्याकरण हो या व्यवहार हो सभी का लक्ष्य पीड़ित और शोषित जनता के कल्याण की कामना तथा लक्ष्यपूर्ति ही रहा है। धूमिल अश्लीलता या गालियों का कवि नही हैं, वो सच्चाई को उधेड़कर अभिव्यक्त करने वाला कवि है, जोझूठ, अनादर, असमानता और निकृष्टता–अकर्मण्यता का वैचारिक, कत्ल कर देना चाहता है, जिससे व्यवहार में समाज, व्यक्ति, परिवार, संस्थाएँ, सोच और देश मजबूत हो सके, समृद्ध हो सके।

Sudama Pandey Dhumil was born on 9 November 1936 in Khevli village in Varanasi district of Uttar Pradesh and died in 1975 AD. Dhumal is a fearless and fearless poet. His poetry is a poem of courage and gloom which is expressed with the expectations of development, equality and prosperity. After 1960, disillusionment with politics, administration and religious-social orientation started in India, the leading poet was foggy.

The poet who carries the ideological content of Akavita with dedication and dedication is a tarnish. He is not a poet who detests foggy politics, but is opposed to political distortions.

When Dhumil writes such a thing as 'Kavita is the man who is in language', then in the poem like 'Naxalite', he seems to be out of 'chivalry' i.e. 'Tameez' .... But the tide of emotions and the exploited help The public's pain seems to compel them to do so. The language of poetry and poetry has been constantly under watch and whether the poems have grammar or behavior, the goal of all has been the wish and goal of the welfare of the afflicted and the exploited masses. Foggy is not a poet of vulgarity or profanity, he is a poet who exposes the truth, who seeks to slaughter the ideology of falsehood, dishonor, inequality and nepotism, which in practice causes society, individuals, families, institutions, thinking and May the country be strong, prosperous.

मुख्य शब्द : धूमिल, राजनीति, संसद, प्रजातंत्र, आदमी, प्रमुख, समाज, कविता, प्रयास, उपेक्षित, बौद्धिकता, संघर्ष।

Foggy, Politics, Parliament, Democracy, Man, Chief, Society, Poetry, Effort, Neglect, Intellectualism, Struggle.

प्रस्तावना

भारतीय राजनीति में 70 और 80 का दशक राजनैतिक और बौद्धिक चेतना का युग माना जाता है। इस काल में अनेक कवियों ने संघर्ष और लोक

कल्याण जैसे मुद्दों पर कविता कर्म संपन्न किया है। सुदामा पांडेय धूमिल भी उन्हीं में से एक हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतिव को समझना आवश्यक है।

हिन्दी भाषा के सभी शब्दकोश 'धूमिल' का अर्थ धुएँ का रंग या 'धुंधला' बताते हैंलेकिन हिन्दी की अकविता के दौर का कवि धूमिल प्रशासन की मनमानी, सरकारों के निठल्लेपन और समाज तथा कट्टरतावादियों के वास्तविक चरित्र का रंग उतार कर रख देता है। अपने दौर की कविता के काल का 'एंग्री यंग मैन' कवि धूमिल जब लिखता है तो लगता है क्रांति का कोश रचा जा रहा हो। उनका हर शब्द नारा और हर कविता क्रांति की पटकथा जैसी महसूस होती है , राजनीति में व्याप्त अनीति को धूमिल धमाके और कठोरता से ठोक–पीट कर अलग करने पर आमादा दिखाई देते हैं।

''लो यह रहा तुम्हारा चेहरा
यह जुलूस के पीछे गिर पड़ा था'' 1

सुदामा पांडेय धूमिल का जन्म 9 नवम्बर 1936 ई. में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के खेवली गाँव में हुआ था और 1975 ई. में उनकी मृत्यु हो गई........38 वर्ष की अल्पआयु में दुनिया छोडकर जाने वाला ये कवि हिन्दी कविता में जैसे बारूद भरकर गया हो। ब्रेन ट्यूमर जैसी बीमारी से जान गंवाने वाला ये वैचारिक योद्धा बौद्धिकता की तमाम परतें उन्मुक्त अभिव्यक्ति के साथ उतारने में सफल रहा है। धूमिल हिन्दी कहानी की जगह कविता को महत्ता और महत्व के प्रभावी रूप के साथ स्थापित करने में सफल रहे।

1972 में 'संसद से सड़क' तक जैसी रचना के प्रकाशित होते ही सुधि पाठकों से लेकर सामान्य पाठक जैसे अपने राजनैतिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने को उतारू हो जाते हैं, 'कल सुनना मुझे' रचना 1976 में प्रकाशित होती है और कवि धूमिल के माध्यम से तमाम जनता राजनीति, प्रशासन और समाज की न्यूनताओं, हेयताओं के खिलाफ शिकायत करती दिखती है। 'सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र' जैसी रचना 1984 में प्रकाशित होती है तो धूमिल को दुनिया से विदा हुए 9 वर्ष हो चुके होते हैं और देश श्रीमती इंदिरा गाँधी की मृत्यु और भोपाल गैस त्रासदी जैसी डरावनी घटनाओं से मायूस हो चुका होता है।

कायदे की बात ये है कि धूमिल भ्रष्ट नेताओं, चापलूस, अकर्मण्य और रिश्वतखोर नौकरशाहों को धर्म को धंधा मानने वाले धर्माचार्यों को, समाज को गर्त में ले जाने वाले समाज के तथाकथित ठेकेदारों को खुलेआम चुनौती देकर उनका असली चरित्र जनता के सामने रख देते हैं।

धूमिल बेखौफ और निडर कवि हैं। उनका काव्य साहस और कटुयथार्थ का काव्य है जो विकास, समानता और समृद्धि की अपेक्षाओं के साथ अभिव्यक्त होता है।............ ....धूमिल की भाषा कई बार गली–मोहल्ले की भाषा लग सकती है लेकिन उसमें परिवर्तन और विकास की आक्रामक अपील है।

धूमिल ने 1953 में आईटीआई का डिप्लोमा किया था और विद्युत अनुदेशक बन गये थे, लेकिन उनकी कविताएँ जैसे करंट देकर त्वरित चेतना फैला देती हैं।

1960 के बाद भारत में राजनीति, प्रशासन और धार्मिक–सामाजिक ढ़कोसलों से मोहभंग की जो शुरूआत हुई उसके प्रमुख कवि धूमिल ही थे। जलते हुए सत्य के कवि धूमिल को 'कल सुनना मुझे' रचना के लिए 1979 में मरणोपरान्त साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक बच्चन सिंह ने लिखा है –"धूमिल का उदय धूमकेतु की तरह होता है जिसमें अग्नि भी है, धुआँ भी, धुआँ आधुनिकता है और अग्नि प्रगतिशील चेतना। धूमिल की ऊर्जा विक्षोम आक्रामकता, भाषिक नवोन्मेष देखकर थोड़ी देर के लिए निराला की याद आ जाती है, पर धूमिल का एक छोर आधुनिकता से बंधा था तो दूसरा छोर अराजकता से।" [2]

वास्तव में राजनीति की निकृष्टता और अकर्मण्यता ने धूमिल को झकझोर दिया था और प्रतिकार करने पर उन्हें अराजक कवि तक कह दिया गया ।

धूमिल ने जहाँ' रोटी और संसद', 'किस्सा जनतंत्र', 'हरित क्रांति', 'विद्रोह', 'अकाल–दर्शन','सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र','मतदाता','रणनीति','संसद समीक्षा','संयुक्त मोर्चा', 'लोकतंत्र','जनतंत्रएक हत्या संदर्भ', 'अब मैं अगली योजनाओं पर बात करूँगा', 'प्रस्ताव' आदि राजनैतिक विमर्श की कविताएँ लिखी हैं वहीं 'ट्यूशन पर जाने से पहले', 'न्यू गरीब हिन्दू होटल', 'ताजा खबर', 'कर्फ्यू में एक घंटे की छूट', 'रोटियों का शहर', 'मैंने घुटने से कहा', 'मैं सहज होना चाहता हूँ','नौजवान', 'कमरा','पांचवे पुरखे की कथा','गरीबी','उसके बारे मे','गाँव','सिलसिला','दिनचर्या' आदि कविताएँ समाज और धर्म की विसंगतियों, ढकोसलों, पूर्वाग्रहों और आडम्बरों पर चोट कर उनसे मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती हैं। ये कविताएँ अपने लक्ष्यमार्ग में व्यवस्था विरोध का हथियार लेकर आगे बढती हैं और आक्रामकता के साथ निर्णय पर पहुँचने की हड़बड़ी में दिखती हैं। ये कविताएँ स्पष्ट तौर पर धूमिल के मनोविज्ञान को तत्कालीन जनता के मनोविज्ञान से मैच कराती हैं और इसी कारण धूमिल को साधारण पाठक या जनता अपने मन की बात करने वाला कवि मानती है।

अकविता की वैचारिक सामग्री को निष्ठा और समर्पण से उठाने वाला कवि धूमिल ही है। अकविता के वैचारिक कलेवर के बारे में आलोचक डॉ. अमरनाथ ने लिखा है"प्रयोगवाद की गोद से निकलने वाले इस काव्यांदोलन के मूल में भी विश्वयुद्धों के बाद दुनिया भर में फैलने वाली हताशा, एप्सर्डिटी और निरर्थकता बोध की लहर है। इस कविता में सामाजिक राजनीतिक विकृतियों और सार्वजनिक जीवन में व्याप्त पाखंड, बेईमानी, मुखौटे, भ्रष्ट आचरण का पर्दाफाश किया गया है।[3]

धूमिल राजनीति से घृणा करने वाले कवि नहीं हैं, बल्कि राजनीतिक विकृतियों के विरोधी हैं। सार्वजनिक जीवन और समाज में सड़ांध मारती अनुचित धारणाओं, मिथकों और पूर्वाग्रहों को वे तुरन्त प्रभाव से खत्म कर देने का आह्वान करते हैं। राजनीति की अनुचित दशाओं पर धूमिल की नाराजगी है, कोप है –

"तुम्हारी आत्मीयता''''''''''''''''''''''''''''''''
वक्त की निचली सतहों में उतर कर
स्याह हो गयी है, और चरित्रहीनता
मंत्रियों की कुर्सी में तबदील हो चुकी है
तुम्हारी तरह मुझे भी अफसोस है
मैंने भी इस देश को एक जवान आदमी की
रंगीन इच्छाओं की पूरी गहराई से प्यार किया था
उसकी पालिश उतर चुकी है।[4]

धूमिल की कविताएँ'चुनाव' और 'मतदाता' साफतौर पर राजनीति के रसातल में जाने के शोधग्रंथ जैसी हैं और धूमिल जैसा विरोध आज के दौर का कवि उतनी शिद्दत से कर भी नहीं पा रहा। प्रसिद्ध आलोचक और फिल्म समीक्षक जयप्रकाश चौकसे ने राजनीति के इस शूर्पनखा स्वरूप और दुर्योधनी अहंकार के आधुनिक रूप को इस तरह दर्शाया है "चुनाव की एक जीत का सिक्का बार–बार भुनाया जा रहा है। दूसरी और मेहनतकश को अपना अधिकार भी नहीं मिल पाता। उसका सिक्का खोटा होने के बाद भी बाजार में चल रहा है"।[5]

'हरित क्रांति','रोटी और संसद','गरीबी','गाँव' आदि कविताएँ धूमिल ने उस आदमी के दर्द और व्यथा के साथ उकेरी हैं जो लगातार ठगा जाकर भी निकृष्ट और धोखेबाज नेताओं को चुनने पर मजबूर है। जो धार धूमिल के शब्दों में दिखाई देती है वो वक्त बीतते–बीतते बाद के अनेक कवियों में भोथरी होती जाती है।

धूमिल जब 'कविता भाषा में आदमी होने की तमीज है' जैसी बात लिखते हैं तो उसी के साथ वे 'नक्सलवादी' जैसी कविता में 'शिष्टता' अर्थात 'तमीज' को परे रखते दिखते हैं ....लेकिन भावनाओं का ज्वार और शोषित विवश जनता की पीड़ा उन्हें ऐसा करने पर मजबूर करती दिखती है। 'मोचीराम' कविता के जरिये वे भारतवर्ष की सामाजिक असमानताओं, हेयताओं और विद्रूपताओं का नंगा चेहरा सामने रख देते हैं। 'मोचीराम' तंत्र और व्यवस्था के विपरीत कर्मों पर कब्र के शिलापट्ट जैसा गाड़ दिया गया विचार है, जो हरदम याद दिलाता है कि तंत्र और व्यवस्था सड़कर दफन हो चुके हैं।

'गरीबी' कविता में गरीबी को 'एक खुली हुई किताब' बताकर उसे 'हर समझदार और मूर्ख के हाथ में दे दिया गया' बताने वाले धूमिल अपनी अंतिम कविता में कहते हैं कि 'अक्षरों के बीच गिरे हुए आदमी को पढ़ो'..... वास्तव में धूमिल का वैचारिक और बौद्धिक दर्जा उत्कृष्ट है और वे घोर बौद्धिक होकर भी साधारण पाठक के मन में घर बनाकर बैठने का सामर्थ्य रखते हैं जो प्रायः मुक्तिबोध और सर्वेश्वरदयाल जैसे कवियों को नही मिल पाया है।

स्वयं को अबोध जन्मों का माध्यम बताने वाले धूमिल ने'भूख' कविता में हड़ताल का रास्ता हथियार के रास्ते से जोड़ने की बात की है। वे अकविता में भी प्रगतिवाद के पाये लगाकर चलने वाले कवि हैं। 'चुनाव' कविता में 'वादों की दुनिया में धोखा खाने के लिए कुछ नहीं होगा' कहने वाला कवि जब 'लोकतंत्र' कविता में लिखता है कि "न मैं पेट हूँ, न दीवार हूँ न पीठ हूँ, अब मैं विचार हूँ".... ....तो लगता है जैसे निराशा की पत्थर भूमि पर कैक्टस जैसे जीवन में भी कोई उम्मीद का फूल निकलने को तड़प रहा हो।

धूमिल की काव्यभाषा अनेक बार उनके प्रयोगवादी होने के भ्रम को लीक करती है तो उनका आक्रामक अंदाज प्रगतिवादी हो जाने जैसा है.....लेकिन व्यवस्था, तंत्र और सामाजिक धार्मिक संस्थानों और मान्यताओं के निरर्थक तथा अप्रासंगिक हो जाने पर काव्यालोचना करने वाले धूमिल अंततः अकविता के कवि ही ठहरते हैं। उनकी कविताएँ आम आदमी के जीवन बोध के साथ क्षण – दर– क्षण और परत–दर–परत अभिव्यक्ति करने वाली कविताएँ हैं।

कवि और कविता की भाषा पर धूमिल की नजर लगातार रहीं है और उनकी कविताओं का व्याकरण हो या व्यवहार हो सभी का लक्ष्य पीड़ित और शोषित जनता के कल्याण की कामना तथा लक्ष्यपूर्ति ही रहा है।

'ट्यूशन पर जाने से पहले' कविता में जीवनचर्या की घोर आपाधापी का माहौल दर्शाने वाला कवि धूमिल कब प्रेम का पाठ पढा जाता है..ये सहजता से समझा नहीं जा सकता, लेकिन उसका विचारस्वाद जब अंतस में उतरता है तो मन में मुस्कान–सी होती है।

धूमिल ने 'प्रस्ताव' कविता में 'बसंत' और 'अंत' को केवल युग्म–शब्दों जैसी अभिव्यक्ति न देकर उनमें जीवन–व्यवहार के पक्षों को ही जैसे ठूँस दिया है। ...'हर तरफ धुआँहै' कविता में फर्जी देशभक्तों की बुक्का फाड़ आदतों कोखींच कर पाठकों के सामने निर्वस्त्र कर डाला है। 'गाँव' कविता में उपेक्षित कर दिये गये गाँवों को 'नरक का भोजपुरी अनुवाद' बता डाला है....तो इसका साफ और सीधा मतलब है कि धूमिल उपेक्षित और अनाथ सी छोड़ दी गयी जनता के साथ हैं और उन्हीं की तरफ से लिख–बोल रहे हैं।

धूमिल अश्लीलता या गालियों का कवि नही हैं, वो सच्चाई को उधेड़कर अभिव्यक्त करने वाला कवि है, जोझूठ, अनादर,असमानता और निकृष्टता–अकर्मण्यता का वैचारिक, कत्ल कर देना चाहता है,जिससे व्यवहार में समाज, व्यक्ति, परिवार, संस्थाएँ, सोच और देश मजबूत हो सके, समृद्ध हो सके।

धूमिल व्यवस्थाओं का आतंक खत्म कर उन्हें लोकतांत्रिक पटरी पर लाने की हिम्मत करने वाला कवि है। इस प्रकार के प्रयासों में वे भाषा की सटीकता और मजबूती को महत्वपूर्ण मानते हैं–

''भाषा उस तिकड़मी दरिन्दे का कौर है
जो सड़क पर और है
संसद में और है
इसलिये बाहर आ!
संसद के अँधेरे से निकलकर
सड़क पर आ। 6

अध्ययन का उद्देश्य

धूमिल जैसे प्रतिष्ठित कवि ने राजनीति और समाज के व्यवहार को समझकर उसे लोक कल्याण हेतु उपयोगी बनाने का प्रयास किया है। धूमिल की कविता आम आदमी के जीवन को बेहतर बनाने का उद्देश्य सिद्ध करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *'कविता'–धूमिल, आधुनिक काव्य संग्रह–संपादक–रामवीर सिंह, पृष्ठ 292 ।*
2. *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास– बच्चन सिंह पृष्ठ 451।*
3. *हिन्दी आलोचना की परिभाषिक शब्दावली–डॉ. अमरनाथ, पृष्ठ 19 ।*
4. *शहर में सूर्यास्त–धूमिल, आधुनिक काव्य संग्रह–सम्पादक रामवीर सिंह पृष्ठ 287।*
5. *फसल काटने के बाद उगी फसल–जयप्रकाश चौकसे, दैनिक भास्कर , गुरूवार 26 नवम्बर 2020, संपादकीय।*
6. *आधुनिक काव्य संग्रह* – संपादक – रामवीर सिंह, पृष्ठ 29